।। ओ३म्।।

कण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।। – आर्यसमाज का पहला नियम

वर्ष ३१, अंक १६ **एक प्रति : २ रुपये**

सोमवार ३१ मार्च, २००८ से ६ अप्रैल, २००८ तक

विक्रमी सम्वत् २०६४ दयानन्दाब्द : १८५

सृष्टि सम्वत् १६६०८५३१०८ वार्षिक : १५० रुपये

फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल: aryasabha@yahoo.com

Website : www.delhisabha.com

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक 9 मार्च, 08 के निर्णयानुसार

महर्षि दयानन्द जी के निर्वाण के 125 वें वर्ष के आयोजन के लिए

दिल्ली में वृहद् बैठक 26-27 अप्रैल, 2008 को

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली-110001 में होगी आयोजित

आप सबको विदित ही है कि स्वामी दयानन्द का निर्वाण १८८३ की दीपावली के दिन अजमेर में हुआ था। उनके निर्वाण को इस वर्ष दीपावली पर १२५ वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। यह हम सबके लिए ऐतिहासिक अवसर होगा। सन् १९८३ में अजमेर में मनाई गई निर्वाण शताब्दी को हम आज भी याद करते वहद रूपरेखा तैयार की है। आर्यजनता से इसके आयोजन के लिए सुझाव भी मांगे गए थे। उन सुझावों को इस योजना में सम्मिलित करने का प्रयत्न किया गया है। इस कार्य योजना को अगस्त, २००८ से दीपावली २००९ तक चलाने की योजना है। इस योजना के जो मुख्य उद्देश्य हैं वे पृष्ठ संख्या ३ पर

बैठक में सम्मिलित होने वाले आर्यजन

कपया ध्यान देवें

सार्वदेशिक सभा के सभी अन्तरंग सदस्य महानुभाव, सभी प्रान्तीय सभाओं के प्रमुख अधिकारी, प्रान्तीय आर्य विद्या परिषद् के अधिकारी, सार्वदेशिक आर्य वीर दल, सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल, एवं प्रान्तीय आर्य वीर दल के प्रमुख अधिकारी, गुरुकुलों तथा आर्य संस्थाओं के मुख्य

हैं। आओ ! इस अवसर को भी ऐसा अभूतपूर्व बना दें ताकि आने वाली पीढ़ी के लिए यह कार्यक्रम उदाहरण बन जाएं। इसके लिए सार्वदेशिक सभा ने एक आयोजन समिति का गठन किया था, जिसके अध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी हैं। इस समिति ने इस कार्यक्रम के सम्बन्ध में एक

अधिकारी इस योजना के क्रियान्यवन में जिम्मेदारी से भाग लें। आने से पूर्व अपना पंजीकरण/सूचना, पत्र अथवा ईमेल द्वारा श्री अरुण प्रकाश वर्मा, व्यवस्था प्रमुख के नाम ***सभा कार्यालय - १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१,*** Email : aryasabha@yahoo.com के पते पर अवश्य ही लिख दें ताकि तदनुकूल आवास आदि की व्यवस्था की जा सकेगी। बिना सूचना के पधारने पर व्यवस्थाओं में बाधा आने की संभावना है। प्रान्तीय सभाओं के अन्तर्गत आने वाली संस्थाओं के अधिकारी अपनी प्रान्तीय सभा में भी अपने पधारने की सूचना अवश्य दें। — ***प्रकाश आर्य, सभामन्त्री, सार्वदेशिक सभा***

दिए गए हैं।

समिति ने निश्चय किया है कि इस कार्ययोजना को और अधिक विस्तत तथा उपयोगी बनाने के लिए अधिक से अधिक महानुभावों का सहयोग लिया जाए। अतएव इस पत्र के माध्यम से हम सब आर्य

— शेष पष्ठ ३ पर

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्वावधान में

134वां आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रमी सम्वत् २०६५ तद्नुसार

रविवार ६ अप्रैल, २००८

स्थान : फिक्की ऑडिटोरियम, बाराखम्बा रोड

निकट मंडी हाउस मैट्रो स्टेशन, नई दिल्ली-११०००१

यज्ञ	:	**प्रातः ८.३० से ९.४५ बजे**
सार्वजनिक सभा	:	**प्रातः १०.०० से १.०० बजे**
आशीर्वाद	:	**स्वामी डॉ० उत्तमायति जी**
दीप प्रज्जवलन	:	**श्री राजीव गुलाटी जी** *(MDH)*
अध्यक्षता	:	**ब्र० राजसिंह आर्य जी** *(प्रधान, दि.आ.प्र.स.)*
मुख्य अतिथि	:	**श्रीमती शीला दीक्षित जी** *(मुख्यमंत्री, दि.स.)*
मुख्य वक्ता	:	**डॉ० जयेन्द्र कुमार जी** *(वैदिक प्रवक्ता)*
प्रीतिभोज	:	**अपराह्न १.०० बजे**

समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि अधिकाधिक संख्या में पधारकर समारोह को सफल बनाने में अपना सहयोग प्रदान करें।

निवेदक :- **धर्मपाल आर्य** *(प्रधान)* **अरुण वर्मा** *(कोषाध्यक्ष)* **सुरेन्द्र रैली** *(महामन्त्री)*

अत्यावश्यक बैठक

सत्यार्थ प्रकाश के सम्बन्ध में विशेष विचार विमर्श हेतु सत्यार्थ प्रकाश के सभी प्रकाशकों, वितरकों एवं वैदिक विद्वानों की आवश्यक बैठक दिनांक १२ अप्रैल, ०८ को सभा कार्यालय -१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली में सायं ४ बजे आयोजित की गई है। सभी से निवेदन है कि बैठक के महत्व को समझते हुए अवश्य ही पधारें।

निवेदक ब्र० राजसिंह आर्य, प्रधान, दिल्ली सभा — धर्मपाल आर्य, प्रधान, आर्य के० सभा दिल्ली

वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली के तत्वावधान में

नई दिल्ली के द्वारिका क्षेत्र में

नवीन आर्यसमाज का स्थापना समारोह

रविवार २० अप्रैल, २००८ प्रातः ८.३० बजे

स्थान : एम.डी.एच. इन्टरनेशनल स्कूल, सैक्टर-६, द्वारिका, नई दिल्ली-११००७५

मान्यवर, आपको विदित ही है कि दिल्ली का विस्तार बहुत हो चुका है। अतः आर्यसमाज के विस्तार की भी आवश्यकता है। हमारा सौभाग्य है कि पश्चिमी दिल्ली के द्वारिका क्षेत्र में एक नई आर्यसमाज का गठन किया जा रहा है। अतः समस्त आर्यसमाजों, शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों, सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं से निवेदन है कि भारी संख्या में पधारें।

-: निवेदक :-

सुरेन्द्र बुद्धिराजा प्रधान — **वीरेन्द्र सरदाना** मन्त्री — **सुखबीर सिहं आर्य** कोषाध्यक्ष

आर्यसमाज के नियमों की व्याख्या

पहला नियम

।। सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।।

— प्रो० रत्नसिंह

गतांक से आगे :-

नियम का दूसरा भाग इस प्रकार है— " जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं।" इसका अर्थ हुआ कि "वेद" से जिन–जिन पदार्थों का ज्ञान होता है। वेद का प्रतिपाद्य विषय क्या है, इसकी व्याख्या ततीय नियम में की जाएगी। यहाँ पदार्थ पद का अर्थ विचारणीय है। तर्क–कौमुदी के अनुसार " अभिधेयाः पदार्थाः" अर्थात् शब्द द्वारा व्यक्त किसी भी वस्तु को पदार्थ कहते हैं। इस अर्थ में संसार की सभी ज्ञेय वस्तुओं को पदार्थ कह सकते हैं। पदार्थों का वर्गीकरण करते हुए वैशेषिक करते हुए दर्शन में छह पदार्थ माने गए हैं, जिनके नाम यह हैं—द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय। बाद में चलकर अभाव को भी सातवां पदार्थ मान लिया गया है। द्रव्य के ६ भेद हैं, जो इस प्रकार हैं— पथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, काल, दिग्, आत्मा (जीवात्मा व परमात्मा) तथा मन। सत्यार्थप्रकाश अष्टम समुल्लास में महर्षि दयानन्द जी ने परमेश्वर व जीव के साथ ही काल और आकाश को भी अनादि माना है। अनादि पदार्थ कार्यरूप में परिणत न होने के कारण अपने निमित्तकरण की अपेक्षा नहीं रखते। यदि प्रस्तुत नियम में पदार्थ पद का प्रयोग उक्त अर्थ में किया जाए तो यह मानना पड़ेगा कि ईश्वर अपना स्वयं का तथा जीवात्मा, काल व आकाश का निमित्तकारण है, अर्थात् वह इन सबको उत्पन्न करता है। किन्तु यह आशय महर्षि के सिद्धांत के विरूद्ध है। अतः पदार्थ का पद का अर्थ यहाँ पर काय जगत् करना ही समीचीन है, क्योंकि किसी शब्द का अर्थ प्रकरण और लेखक के आशय को लेकर किया जाता है।

नियम के तीसरे भाग में कहा गया है कि उन सबका, अर्थात् वेद और कार्यजगत् का परमेश्वर आदिमूल है। आदि का अर्थ है—जिसके पूर्व और पूरे कुछ न हो। मूल का अर्थ है कारण। सत्यार्थप्रकाश अष्टम समुल्लास में सांख्यदर्शन के "मूले मूलाभावाद–मूलं मूलम्" सूत्र के अर्थ में महर्षि ने लिखा है कि–"मूल का मूल" अर्थात् कारण का कारण नहीं होता। इस अर्थ के आधार पर आदिमूल का अर्थ हुआ आदि कारण। सत्यार्थप्रकाश के इस प्रकरण में आदिकारण का अर्थ हुआ आदि कारण। सत्यार्थप्रकाश के इस कारण में आदिकारण का अर्थ प्रकति किया गया है। इस आधार पर कुछ विद्वान् बिना गंभीरता से विचार किए प्रस्तुत नियम में प्रयुक्त आदिमूल शब्द का अर्थ प्रकति लेकर इस नियम का यह अर्थ करने का प्रयत्न करते हैं कि परमेश्वर इस जगत् का उपादानकारण है, क्योंकि आदिमूल का अर्थ है प्रकति और प्रकति है जगत् का उपादान कारण। उनकी दष्टि में आदिमूल का अर्थ उपादानकारण है, परन्तु यह व्याख्या सर्वथा अनुचित है और महर्षि के मन्तव्य के सर्वथा विरूद्ध है। सत्यार्थ प्रकाश अष्टम समुल्लास में महर्षि ने प्रश्नोत्तर रूप में इस विषय का विवेचन इस प्रकार किया है।

प्रश्न—जगत् के कारण कितने होते है।

उत्तर—तीन—एक निमित्त, दूसरा, उपादान, तीसरा साधारण। निमित्त कारण उसको कहते हैं कि दूसरे को प्रकारान्तर बना देवे। दूसरा बना देवे। दूसरा उपादानकारण उसको कहते हैं, जिसके बिना कुछ न बने वही अवस्थांतर रूप होके बने और बिगड़े भी। तीसरा साधारण कारण उसको कहते हैं कि जो बनाने में साधन और साधारण निमित्त हो। निमित्तकारण दो प्रकार के हैं। एक, सब सष्टि को कारण से बनाने, धारने और प्रलय करने तथा सबकी व्यवस्था रखने वाला मुख्य निमित्तकारण परमात्मा । दूसरा, परमेश्वर की सष्टि में से पदार्थों को लेकर अनेकविध कार्यान्तर बनाने वाले साधारण जीव। उपादानकारण, प्रकति परमाणु जिसको सब संसार के बनाने की सामग्री कहते हैं।

इस उदाहरण से स्पष्ट है कि महर्षि के मंतव्यानुसार ईश्वर जगत् का निमित्तकारण है, उपादान नहीं। नवीन वेदान्ती लोग मकड़ी का उदाहरण देकर ब्रह्मा को जगत् का उपादानकारण सिद्ध करते हैं। उनका विचार है कि जिस प्रकार बिना किसी ब्राह्य सामग्री की सहायता लिए अपने भीतर से तंतु निकालकर मकड़ी जाला बना लेती है, उसी प्रकार ब्रह्मा अपने में से जगत् को बना आप जगदाकार हो जाता है।

क्रमशः
आर्यसमाज के नियम व्याख्या

आओ करें ! नव वर्ष का स्वागत

— आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर

समाज में समरसता बनाए रखने हेतु पर्व महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ७ अप्रैल, २००८ को आर्यसमाज स्थापना दिवस, नव सम्वत्सर विक्रमी सम्वत् २०६५, १३ को बैशाखी, १४ को रामनवमी/अम्बेडकर जयन्ती, १८ को महावीर जयन्ती, १६ को महात्मा हंसराज जन्मदिवस होने से अप्रैल, २००८ को पर्वों का मास कहा जा सकता है। इस अवसर पर आर्यसमाज का १३४वां स्थापना दिवस समारोह फिक्की ऑडिटोरियम, बाराखम्बा रोड, निकट मंडी हाउस मैट्रो स्टेशन, नई दिल्ली में आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्वावधान में रविवार ६ अप्रैल, २००८ को प्रातः ८.३० से १ बजे तक विशाल स्तर पर मनाया जाएगा।

नववर्षं नवहर्षं समद्धि सुख-सम्पदम् कार्यसिद्धिं परां वद्धिं विधत्तां सुचिरंशुभम्। सर्वेभ्यः ग्राहकेभ्य, युगादिशुभाशयाः।।

विभिन्न लोग, विभिन्न तिथियों में नववर्षारम्भ मानते हैं; किन्तु भारत में अधिकांश लोग चैत्रशुदि प्रतिपदा नववर्षारम्भ स्वीकार करते हैं। अधि ाकाशं सम्वत् चैत्र प्रतिपदा से ही प्रारम्भ किए गए हैं। ब्रह्मदिन, सष्टि सम्वत्, वैवस्वतादि, मन्वन्तरारम्भ, सत् युगादि युगारम्भ, कलि सम्वत्, वैक्रम सम्वत्, चैत्र सुदि प्रतिपदा को ही आरम्भ होता है। युगादि शब्द भी युग का आरम्भ दर्शाता है। यद्यपि त्रेता आदि युगों का आरम्भ अन्य तिथियों से होता है, फिर भी कलियुग का आरम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है। इसी कारण इस तिथि से युगादि की गणना की गई है। युगादि दिन पर नीम के पत्तों का गुड़ के साथ सेवन निम्न श्लोक में दर्शाया गया है :—

शतायुर्वज्र देहाय सर्व सम्वत्कराय च। सर्वारिष्टि विनाशाय निम्बकंदल भक्षणम्।।

सभी जानते हैं, गुड़ मीठा व नीम कड़वा होता है। जीवन में सुख की मिठास और दुख का कड़वापान स्वीकार कर हम उन्हें सम्भाव से अंगीकार करें, यही इस श्लोक का संकेत है। जिह्वा का मीठे के लिए लपलपाना और मन का मीठे का अनुभव चाहना सदा ठीक नहीं होते। कभी—कभी कड़वा हितकर हेता है। अतः योग्य प्रमाण में इन दोनों का सेवन अत्युत्तम होता है।

काल अखण्ड होता है, किन्तु व्यवहारिक सुलभता के कारण कालभेद कर लिए गए हैं। जनश्रुति है कि युगादि दिवस पर श्री रामचन्द्र जी बनवास काटकर आने पर राज्याभिषेक किया गया था। वीर शैव परम्परागत पांच आचार्यों का अवतार भी इसी दिन माना गया है। इस दिन के महत्व को ध्यान में रखकर महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने आर्यसमाज की स्थापना इसी दिन की थी।

इसी दिन सष्टि सम्वत् का शुभारम्भ हुआ था। प्रथम सूर्योदय दर्शन रविवार को हुआ। उस दिन सब नक्षत्र मेषराशि में थे।

इसी दिन मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का अभिषेक हुआ था।

इसी दिन महाराज युधिष्ठिर का राजतिलक हुआ था।

इसी दिन गोतम जयन्ती तथा झूलेलाल जयन्ती भी होती है।

इसी दिन शकारि विक्रमादित्य द्वारा अपनी मातभूमि की शत्रुओं के चुंगल से मुक्ति का विजयोत्सव, विक्रमी सम्वत् का आरम्भ, चेती चांद/उगाड़ी/ गुड़ी पड़वा होती है।

इस अवसर पर रबी की फसल पकने से इसे फसली संवत भी कहते हैं। इस पुण्य पर्व पर हम घरों का शोधन करें। शुद्ध स्वदेशी वस्त्र धारण कर यज्ञ करें। मध्याह्न में सामर्थ्य अनुसार रोचक, पाचक, भोजन बनाकर मिलकर भोजन करें। स्वाश्रित सेवकों को उससे सत्कत करें। अपराह्न में किसी भी खुले विशाल प्रांगण में सभा करें, जहां संवत्सरों के प्रकार और मान और उनके प्रवेशेतिहास तथा संशोधन इत्यादि विषयों पर लिखित निबन्धपाठ और व्याख्यानों द्वारा विचारों का आदान प्रदान तथा बच्चों के लिए खेलकूद का आयोजन कर उन्हें और पुरस्कत करें। एक दूसरे को उनके उज्ज्वल भविष्य हेतु बधाई दें।

गीता के सन्देश — ***"सुखदुःखे समेकत्वा लाभालाभौ जयाजयौ"*** का स्मरण कर मन को समावस्था में रखकर सुख—दुःख भोग करें। युगादि दिवस के इस सन्देश को धारण करने में ही सार्थकता है।

— द्वारा हैल्थहोम, २-दयानन्द ब्लाक, शकरपुर, दिल्ली-९२

महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण के 125 वें वर्ष पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों का संक्षिप्त प्रारूप एवं लक्ष्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का निर्वाण 1883 में दीपावली के दिन अजमेर में हुआ था। अत्यन्त अल्पायु में ही निधन होने के बावजूद उनके द्वारा आरम्भ किये गये कार्य द्रुतगति से आगे बढ़े, चाहे सारे भारत तथा विदेशों में आर्यसमाजों की स्थापना हो, चाहे विद्यालयों की, गौशालाएं, अनाथालय, गुरूकुल, विभिन्न ग्रन्थों का प्रकाशन, संस्कृत एवं हिन्दी भाषा की उन्नति, पाखण्ड और जातिरहित समाज की स्थापना, कुरीतियों का निराकरण आदि वे कार्य थे जो उनके अनुयायियों ने किये। स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा दी गयी राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना ने लाखों लोगों को इस देश को आजाद कराने के लिए उद्वेलित कर दिया। उनके निर्वाण के 125 वें वर्ष दीपावली, 2008 को पूर्ण होने जा रहे हैं। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने एक समिति गठित कर ऐसी योजना बनाने का कार्य आरम्भ किया है जो इस अवसर को ऐतिहासिक बना देगी। इस योजना में प्रत्येक व्यक्ति के लिए कोई न विचार तथा उनका आकर्षक चित्र पहुँचाना।

2. इलेक्ट्रानिक मीडिया के माध्यम से 5 करोड़ परिवारों तक स्वामी दयानन्द का चित्र तथा उनके कुछ मूल विचारों को पहुँचाना।
3. समाचार-पत्रों तथा पत्रिकाओं के माध्यम से 3 करोड़ परिवारों में स्वामी दयानन्द जी के जीवन की अमूल्य घटनाएं तथा चित्र का परिचय कराना।
4. भारत सरकार तथा विभिन्न राज्य सरकारों तथा स्थानीय सरकारों के सहयोग से कुछ ऐसी योजनाओं को आरम्भ कराना, लागू करवाना जिनसे स्वामी दयानन्द जी की स्मृति और स्थाई बन सके।
5. बैवसाइट एवं अन्य इलेक्ट्रानिक माध्यमों द्वारा विभिन्न भाषाओं में दुनिया के अधिकतम लोगों तक महर्षि दयानन्द जी के सिद्धान्त एवं जीवन को

❖

कार्यक्रमों में क्या अपना सुझाव देना चाहेंगे? क्या आप इन सभी योजनाओं में सहयोगी/ भागीदार बनना चाहेंगे?

यदि आप इन अवसर पर बनाई जाने वाली योजनाओं के लिए कुछ सुझाव देना चाहते हैं तो कृपया शीघ्रातिशीघ्र पत्र अथवा ई-मेल द्वारा 20 अप्रैल, 08 तक अवश्य ही अवगत कराएं, आपके द्वारा दिए गए विचार, सुझाव इस योजना को सुन्दर बनाने में सहायक होंगे। अपने सुझाव सभा कार्यालय 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर भेजें। C/o संयोजक, स्वामी दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष आयोजन समिति के नाम हमारे ईमेल aryasabha@yahoo.com पर भेज सकते हैं।

-: निवेदक :-

महर्षि दयानन्द निवार्ण के

प्रथम पृष्ठ का शेष

महानुभावों से अपील करते हैं कि इस पष्ठ पर उल्लिखित मुख्य कार्यों के क्रियान्यवन तथा अन्य कार्यों को जो इस योजना को सुन्दर तथा उपयोगी बनाने के लिए अपेक्षित हों, इस सम्बन्ध में अपने सुझाव शीघ्रतिशीघ्र ***समिति कार्यालय - १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली -१*** के पते पर भेजने की कपा करें। ***आपके सुझाव २० अप्रैल, २००८ तक अवश्य ही कार्यालय को प्राप्त हो जाने चाहिए ताकि उन्हें आगामी बैठक (दिनांक २६-२७ अप्रैल, २००८) में प्रस्तुति की जाने वाली कार्ययोजना में सम्मिलित किया जा सके।***

इस बैठक में सम्पूर्ण तैयार कार्ययोजना को क्रियान्यवन की जिम्मेदारियों को निश्चित करते हुए समयबद्ध योजना के रूप में चलाया जाएगा। इस समारोह का "लोगो" (प्रतीक चिह्न) होली के अवसर पर समिति के अध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी ने अनावत किया था। इस लोगो को हम प्रत्येक कार्य में, अपने छपने वाले सभी पोस्टरों, पैम्फलेटों, कार्यक्रमों में अवश्य प्रयोग करें ताकि यह लोगो अधिक से अधिक लोगों तक पहुच सके। इस प्रतीक चिह्न "लोगो" को हमारी वैबसाईट wwww.delhisabha.com, www.swamidayanand.org से डाउनलोड किया जा सकता है। यदि आप इसे सीडी में प्राप्त करना

कोई कार्यक्रम होगा। इस योजना के मुख्य उद्देश्य निम्न प्रकार से हैं :-

1. आर्यसमाज के संगठन के अन्तर्गत चलने वाले विद्यालयों के माध्यम से 25 लाख परिवारों तक स्वामी दयानन्द सरस्वती का संक्षिप्त जीवन व उनके पहुँचाने का प्रयास करना।

6. इस अवसर पर अजमेर में आयोजित होने वाले विशाल कार्यक्रमों को सुन्दर बनाने तथा सहभागी बनाना।

❖ क्या इन सभी योजनाओं को बनाने के लिए तथा इस अवसर पर किये जाने वाले

125वर्ष आयोजन समिति के समस्त सदस्य

www.satyarthprakash.com, www.swamidayanand.org, www.delhisabha.com

चाहें तो मात्र सभा कार्यालय से १५/– रुपये में उपलब्ध है। डाक से मंगाने पर डाक व्यय स्वयं वहन करना होगा। ❑

बोध कथा

मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना

– महात्मा आनन्द स्वामी

अभी पिछले दिनों बम्बई के सम्बन्ध में गुजरात और महाराष्ट्र वालों में जो झगड़ा हुआ, उसे कौन भूल सकता है? उन दिनों आस्ट्रेलिया का एक परिवार बम्बई के एक होटल में ठहरा था। नीचे सड़क पर छुरे चल रहे थे। लाठियां चल रही थीं। एक–दूसरे का सिर फोड़ा जा रहा था। झगड़ा हो रहा था। आस्ट्रेलियन परिवार के एक युवक ने यह सब–कुछ देखा तो अपने पिता से पूछा – "ये लोग परस्पर क्यों लड़ रहे हैं?"

पिता ने उत्तर दिया – " पुत्र ! ये मनुष्य नहीं। इनमें कुछ मराठी हैं, कुछ गुजराती हैं। इनमें मनुष्य कोई नहीं। यदि मनुष्य होते, तो एक ही देश के निवासी होकर आपस में लड़ते क्यों?"

यह अद्‌भुत दश्य इस देश में है। कहीं धर्म का झगड़ा है, कहीं भाषा का; कहीं प्रदेश का झगड़ा है, कहीं अर्थनीति का। झगड़े के कई आधार उत्पन्न कर रखे हैं हमने, और भुला दिया है इस बात को मिमिलाप का भी एक आधार है – यह पथिवी, जिस पर हम रहते हैं।

हम दूसरों को अच्छा बनाना चाहते हैं, स्वयं अच्छे बनना नहीं चाहते। दूसरों को मनुष्य देखना चाहते हैं, स्वयं मनुष्य बनना नहीं चाहते।

हिन्दू है कोई, मुसलमां कोई।
मैं पूछता हूं तुममें हैं इनसां कोई?

❑

ब्रह्म–सूत्र द्वितीय अध्याय – प्रथम पादः (29)

– डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'

स्वपक्षदोषाच्च ।।२६।।

अर्थ :- (स्वपक्षदोषात्) अपने पक्ष में दोष होने से (च) भी।

भावार्थ :- सूत्रकार के अनुसार पूर्वपक्ष वाले के अपने पक्ष में ही दोष हैं उसका यह कथन कि प्रकृति के एक अंश को जगत् का रूप प्रदान करने से ओर दूसरे अंश को जगत् का रूप न देने से ब्रह्म निरवय न रहकर अवयव वाला हो जायेगा, यह बात प्रत्यक्ष और अनुमान प्रमाण के एकदम विरूद्ध है। हम संसार में दिन–रात देखते हैं कि उपादान कारण में परिवर्तन होने से निमित्त कारण में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता दिखाई देता। उदाहरण के लिए मिट्‌टी के घड़े का रूप धारण कर लेने पर निमित्त कारण कुम्हार में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं पाया जाता। इसी प्रकार जगत् कार्यरूप है। इसके कार्यरूप होने को कोई चुनौती नहीं दी जा सकती, और फिर इसके कारण को मानना भी आवश्यक है। जहाँ कार्य का निमित्त कारण होगा वहाँ उपादान कारण भी अवश्य होगा। इन कारणों का चाहे कैसा भी स्वरूप मानें उनमें समग्र उपादान तत्व की कार्यक्रम में प्राप्ति आदि दोषों के लगने की संभावना है। इसका अभिप्राय यह है कि जगत् की कारणता के सम्बन्ध में इन दोषों के समाधान की आवश्यकता है।

यदि पूर्व पक्ष वाले का अपना ही पक्ष दोषपूर्ण हो तो उसे अपना दुराग्रह छोड़कर इस वेदों द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त को मान लेना चाहिए कि प्रकृति के एक भाग को जगत के रूप में परिवर्तित करके और दूसरे को न परिवर्तित करके ब्रह्मनिरवयव ही बना रहता है, सावयव नहीं हो जाता। अतः ब्रह्मसंकल्प द्वारा प्रकति को प्रेरित कर जगत् के जन्मादि का कारण है, यह सिद्ध होता है। ब्रह्म के इस यथार्थ रूप का साक्षात्कार मोक्ष का साधन है। इसलिए प्रत्येक जिज्ञासु को मोक्ष पाने लिए प्रयत्न करते रहना चाहिए।

– अपने पक्ष की पुष्टि में सूत्रकार अगले सूत्र में एक और हेतु प्रस्तुत करते हैं।

– सी-२ए/६० जनकपुरी, नई दिल्ली-५८

Question & Answer

Recitation of Mantras

Readers are requested to send their questions to us relating to Vedas, Yoga, Yajna, Spiritual Topics and Current Affairs. Please go to **www.vedmandir.com.** You can also send them to "Arya Sandesh" Delhi Arya Pratinidhi Sabha, 15- Hanuman Road, New Delhi. - **Editor**

The questions are answered by Swami Ramswarup ji.

Q. : My financial health is not good and people fail to understand me. I believe in God but I also feel that justice delayed is justice denied. Please tell me a mantra to make things better. **Sandeep**

Ans.: Now a days, it has become very difficult to make anyone understand about the truth. There is a reason behind for the same. In ancient times people used to attend Gurukul since childhood and before their marriage, they became perfect, to discharge their family duties efficently , according to Vedic knowledge. King Dashrath, Harishchandra, Shri Ram etc area fev examples at that time kings as well as their public were quite contended and had peace of mind. The present environment is not commensurate with Vedic thought. In the absence of Vedic teachings, there is injustice, unhappiness and disturbance.

I have full sympathy with my son and you have also a plus point that you believe in God. But what is God and how to worship is a unsolved question to be resolved. Because so many sects are here on the earth and everyone claims that they are right. Now the question arises that in spite of huge worship all-over, the world why the people or nations quarrel and the quarrels are converted into war. Whereas the religion preaches that there is "ONE GOD AND WE ALL ARE ONE." So I'll advise you that first of all one should check himself that, whether he is right or wrong. One should never promote hate. If somebody states wrong about you then try to oversight the same and check yourself that whether he said against you, was right or wrong. If right then try to overcome the fault, if he has said wrong then do not be angry and peacefully keep silence. Now I would like to tell you that actually the said preachings will never be taken in action in life. Otherwise thousands

वाल्मीकि रामायणे जीवनदर्शनम्

गत अंकेन क्रमेषुः-

यथाह स्वयमेव कवि :–

गगनं गगनाकारं सागरः सागरामपिः।

रामरावणयोर्युद्धं रामरावणयोरिव।। ६/५६/१४

अत्र रामरावणयोरुभयोरपि शौर्यं प्रचयापितम्। किन्तु अन्ततो रामेण कते रावण वधे – "सत्यमेव जयते" इत्यस्य सार्वभौमिकसत्यस्यैव सार्थकेता प्रमाणीकता वाल्मीकिना। किन्तु वालमीकिः क्वचिदपि मानवतां न विस्मरति। रावणवधानन्तरं रामो न तं निन्दति, अपितु तस्य पराक्रमं प्रशंसति। रामस्तं शत्रुमपि भ्रातवत् मन्यमानः विभीषणं तस्य शरीरसंस्काराय प्रचोदयन् कथयति–

मरणान्तानि वैराणि निवतं नः प्रयोजनम्।

क्रियतामस्य संस्कारो ममाप्येष यथा तब।।

इत्थ्ं "मानवता सर्वथा रक्षणीयां, मर्यादा सततं पालनीया, धर्मः, सत्यंव्रत च प्रत्येकस्यां परिस्थितौ परिरक्षणीयमेव" – इत्येवास्ति वाल्मीकिरामायणस्य जीवनदर्शनम्। अस्यानुकरणमेव विश्वशान्तेः सुखस्य च मूलम्।

– प्राचार्य,

लाजपतराय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, साहिबाबाद, उ०प्र०

सरल सत्यार्थ प्रकाश

सत्यार्थ प्रकाश के प्रणयन की १२५ वीं वर्षगांठ पर आयोजित सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के अवसर पर लगभग सभी वक्ताओं ने कहा कि प्रत्येक भारतीय को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ना चाहिए। इसी उद्‌देश्य की पूर्ति हेतु हमने वैदिक विद्वान श्री सत्यकाम वर्मा जी की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश सन्देश से जो अत्यन्त सरल भाषा में लिखी गई है एक-एक समुल्लास आर्य संदेश में प्रकाशित करने का निश्चय किया है। आशा है इसे पढ़कर प्रत्येक भारतीय प्रेरणा लेगा और अन्यों को भी इसे पढ़ने के लिए प्रेरित करेगा। सभी आर्य समाजों से निवेदन है कि वे एक-एक समुल्लास के प्रकाशन पर पत्रक के माध्यम से इसका प्रचार-प्रसार करे जिससे सत्यार्थ प्रकाश का सन्देश घर-घर में जाए और इसकी सुगन्धि चहुं ओर फैले। - सम्पादक

of saints are preaching but peace is not being seen. Why? Because mere preaching/talking/prayer will do nothing. The aspirant will have to be hard working, (Tapsya) according to Vedas. Tulsi said about Shri Ram in Uttrakand "BED PURAN BASISHT BAKHANHIN SUNHIN RAM JADYPI SAB JANHIN i.e., Guru Vashishth jee used to preach the philosophy of Vedas to Shri Ram and Shri Ram in turn used to listen with full concentration and devotion. In the end I would advise you to recite Gayatri Mantra daily both the times and perform havan daily with Gayatri Mantra. You must also learn Yoga-asan, Prannayam and meditation locally because I am away and can not teach you personally. You may send your problem again and again at your convenience.

To be continued...

वार्षिक परीक्षाओं में सफल समस्त विद्यार्थियों एवं विद्यालयों को हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा

समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी कक्षा से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 20%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों को नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। आर्य विद्या परिषद् द्वारा प्रकाशित कराई गई नैतिक शिक्षा की ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 1

☎ : 23360150; Email : aryasabha@yahoo.com

गतांक से आगे :-

अनुभूमिका (१)

वेदों की अप्रवत्ति होने के कारण महाभारत युद्ध हुआ। इनकी अप्रवत्ति से अविद्या अन्धकार के भूगोल में विस्तत होने से मनुष्यों की बुद्धि भ्रमयुक्त होकर जिसके मन में जैसा आया, वैसा मत चलाया। उन सब मतों में चार मत अर्थात् जो वेद विरूद्ध पुराणी, जैनी, किरानी और कुरानी सब मतों के मूल हैं, के क्रम से कम के पीछे दूसरा तीसरा चौथा चला है। अब इन चारों की शाखा एक सहस्र से कम नहीं हैं। इन सब मतवादियों, इनके चेलों और अन्य सब को परस्पर सत्यासत्य के विचार करने में अधिक परिश्रम न हो इसलिए यह ग्रन्थ बनाया है। जो–जो इसमें सत्य मत का मण्डन और असत्य का खण्डन लिखा है वह सबको जानना ही प्रयोजन समझा गया है। इसमें जैसी मेरी बुद्धि, जितनी विद्या और जितनी इन चारों मतों के मूल्य ग्रन्थ देखने से बोध हुआ है, उसको सबके आगे निवेदित कर देना मैंने उत्तम समझा है, पक्षपात सबको अपनी–अपनी समझ के अनुसार सत्य मत का ग्रहण और असत्य मत आर्यावर्त देश में चले हैं, उनका संक्षेप से गुण दोष इस ग्यारहवें समुल्लास में दिखलाया जाता है। इस मेरे कर्म में यदि उपकार न मानें तो विरोध न करें। क्योंकि मेरा तात्पर्य किसी की हानि वा विरोध करने में नहीं किन्तु सत्यासत्य का निर्णय करने कराने का है इसी प्रकार सब मनुष्यों को न्यायदष्टि से वर्तना अति उचित है। मनुष्य जन्म का होना सत्यासत्य का निर्णय करने–कराने के लिए है, न कि वादविवाद विरोध करने कराने के लिए। इस मतमतान्तर के विवाद से जगत् में जो–जो अनिष्ट फल हुए, होते हैं उनको पक्षपात रहित विद्वज्जन जान सकते हैं। जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मत–मतान्तर का विरुद्ध वाद न छूटेगा तब तक अन्योन्य को आनन्द न होगा।

–: साभार :–
सत्यार्थ प्रकाश सन्देश

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है।

– सम्पादक

प्राचीन परम्परा है नव संवत्सर को कार्य आरम्भ करने की

— डॉ० अशोक आर्य

भारतीय इतिहास में नव संवत्सर को विशेष महत्व दिया गया है। चाहे अंग्रेजी राज्य में नव संवत्सर की गरिमा को समाप्त करने का प्रयास किया गया। सभी कार्य आरम्भ करने के लिए ईस्वी सन् का सहारा लिया जाने लगा, किन्तु गुलामी की वह जंजीर भारतीय संवत्सर के महत्व व प्रयोग को समाप्त करने में सफल न हो सकी। तभी तो आज भी जब कभी कोई मुहुर्त निकाला जाता है तो इसके लिए संवत् की तिथियां ही देखी जाती हैं। बच्चे का जन्म पत्र बनाना हो या फिर विवाह की तिथि निश्चित करनी हो, सदा देसी महीनों से ही गणना की जाती है। यहां तक कि स्कूलों के नव सत्र का प्रारम्भ होता है तो फिर यह एक अप्रैल से आरम्भ क्यों किया जाता है? स्पष्ट है कि यह एक अप्रैल ही है जिसके आस–पास नव संवत्सर आरम्भ होने की तिथि होती है। इससे स्पष्ट है कि काल गणना में भारतीय नव संवत्सर का स्थान विशेष महत्वपूर्ण है। अतः आओ काल गणना की इस विधि पर विचार करें।

भारतीय इतिहास विश्व का प्राचीनतम इतिहास है। इसी कारण यहां की काल गणना की परम्परा भी प्राचीनतम है। यहां पर काल गणना महाराज ने सामाजिक सर्वाहिकारी कार्यो की बाढ़ सी ला दी थी। इसी कारण ही इस संवत को चला कर इस महामानव को प्रतिवर्ष याद किया जाता है।

उज्जैन के शासक विक्रमादित्य के नाम पर आधारित वर्तमान भारतीय कालगणना के नामी राजा विक्रमादित्य ने शकों को पराजित करने के अवसर पर इस सम्वत् को आरम्भ किया था। इस सम्वत् का आरम्भ ईसा से ५७ वर्ष पूर्व किया गया था। इसका प्रथम दिन प्रतिपदा के नाम से जाना जाता है, जबकि सष्टि का प्रथम दिन भी प्रतिपदा के नाम से जाना जाता है। इस दिन देसी महीने में चैत्र की एक तिथि होती है। यह वही दिन है जिस दिन सष्टि के रचियता उस प्रभु का स्मरण कर विश्व के लोग उसे धन्यवाद देते हैं, जिस प्रभु ने इसकी रचना कर, यहां पर हमें सुखमय जीवन यापन का अवसर दिया है। यह सष्टि कावह दिन था जिस दिन प्रथम बार सूर्योदय हुआ था। तभी तो इस दिन का नामकरण भी रविवार अर्थात् (सूर्यवार) किया गया था। नक्षत्रों की गणना करने वालों के अनुसार उस दिन सभी नक्षत्र मेष राशि में थे।

खिल उठते हैं। वह खुशी से फूले नहीं समाते तथा नाच गाने करने लगते हैं। खुशियों का भरपूर अवसर होता है। नई फसलें किसान का घर भर देती हैं, जिससे उसका भावी जीवन सुखदायी होता है तो यह व्यापार की प्रगति का भी साधन होता है। इस कारण वह अपने नए खाते लगाते हैं, उनकी तिजौरी भी भरने लगी है। बच्चों को सफलता के पश्चात नई कक्षा में जाना होता है। उनकी खुशी का भी पार नहीं होता। इन सभी कारणों से इसे फसली संवत भी कहते हैं।

इस दिन सष्टि रचना तो हुई ही थी। मर्यादा पुरूषोत्तम राम का राजतिलक भी तो इसी दिन ही हुआ था। इतना ही नहीं महाराज युधिष्ठिर का राजतिलक भी इसी दिन हुआ था। हमारी सब की माता मां आर्य समाज का जन्म दिवस भी इसी दिन को ही है, क्योंकि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इसी दिन बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की थी। अतः विश्व भर की आर्य समाजों में यह दिन बड़ी शान से मनाया जाता है। इसी प्रकार अन्य भी अनेक यादें इस दिन के साथ जुड़ी हैं। अतः हम भारतीयों का नव वर्ष तो यही संवत्सर ही है। हमें अंग्रेजी दास्ता वाला नव वर्ष न मना कर यही भारतीय नव संवत्सर मनाते हुए एक दूसरे को बधाई देनी चाहिए। इस अवसर पर मेरी और आप सब बधाई स्वीकार करें तथा आगामी वर्ष में फलें–फूलें।

— ११६ मित्र विहार, मण्डी डबवाली (हरियाणा) १२५१०४

आर्यसन्देश - प्रथम अंक : प्रेरक व्यक्तित्व

जन्मदिवस 1 अप्रैल पर विशेष

आर्यसमाज के अविस्मरणीय शहीद श्री नाथुराम जी

महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती की धरोहर स्वरूप प्राप्त बलिदानी पुस्तक किसी ईसाई की लिखी थी। मौलवियों से कुछ प्रश्न भी पूछे। कोई

की परम्परा भी अत्यन्त प्राचीन व वैज्ञानिक है। संवत् चाहे किसी नाम से तथा कब भी आरम्भ किये गये हों किन्तु इन सबका आरम्भ एक ही दिन चैत्र प्रतिपदा से किया जाता रहा है। नए कार्यों का आरम्भ भी नव वर्ष की प्रतिपदा से ही करने की परम्परा आज भी बनी हुई है। नए नामों से सम्वत् आरम्भ करने पर भी प्राचीनतम सष्टि सम्वत् १९६०८५३१०८ लिखना नहीं भूलते। जिसका भाव यह है कि इस सष्टि को बने आज १९६०८५३१०७ वर्ष हो चुके हैं तथा १९६०८५३१०७ वें वर्ष के आगमन की हम प्रतीक्षा में स्वागत में तैयार हैं, जो कुछ ही दिनों में आ रहा है। वर्तमान में जो संवत भारत में सुप्रसिद्ध है, वह विक्रमी सम्वत् के नाम से जाना जाता है। भाव यह है कि इसका आरम्भ महाराजा विक्रमादित्य के नाम से हुआ है। इस नक्षत्र गणना करने वाले तो इसके महीनों के नामकरण भी नक्षत्रों को ही मानते हैं। उनका मानना है कि चित्रा नक्षत्र में आरम्भ होने के कारण वर्ष के प्रथम महीने का नाम चैत्र रखा गया। विशाख नक्षत्र से वैशाख नामकरण हुआ। ज्येष्ठा से जेठ महीना बना, उत्तर आषाढ़ ही आषाढ़ का जन्मदाता हुआ, श्रवण ने श्रवण का नामकरण किया, उत्तर भाद्र नक्षत्र के कारण भादों महीना अस्तित्व में आया, अश्विनी का जन्मदाता अश्विन नक्षत्र ही है, कति नक्षत्र से कार्तिक, मगशिरा से मार्गशीर्ष अगहन पौष ने पूस तथा माघ नक्षत्र से माघ महीने का नाम रखा गया।

इस नव संवत्सर के आरम्भ में ही नई फसलें पक कर तैयार होती हैं। नई फसल के आने से किसानों के ही नहीं व्यवसाईयों के मन कमल भी

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर का त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

श्री भारत भूषण गुप्ता - प्रधान एवं श्री रविकान्त गुप्ता - मन्त्री बनें

नव निर्वाचिन प्रधान
श्री भारत भूषण जी गुप्ता

नव निर्वाचिन मन्त्री
श्री रविकान्त जी गुप्ता

परम्परा का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि यह वह अग्नि है जिसे बुझाने का जितना प्रयास किया गया है, यह उतनी ही अधिक तीव्र होकर धधकी हैं। वेद धर्म के दीवानों ने इसे प्रचण्ड रखने के लिए अपने आप को समिधा बनाकर इस बलिदानी हवन कुण्ड में झोंक दिया। आर्यवीरों की इसी बलिदानी परम्परा में सिन्ध प्रान्त के नाथूराम जी का नाम सदा बड़े आदर के साथ लिया जाता रहेगा।

१ अप्रैल सन् १९०४ को एक सम्भ्रान्त ब्राह्मण पं० कीमत राय जी के यहां जन्मे इकलौते पुत्र नाथुराम को बड़े लाड प्यार से पाला गया। नाथुराम जी के हृदय पर प्रभाव पड़ा तथा उन्होंने उठती जवानी में आर्यसमाज में आकर्षण अनुभव करते हुए १९२७ में अपने सगे सम्बन्धियों व परिजनों की चिन्ता छोड़ आर्य समाज में प्रवेश किया तथा तन्मय हो पूरी लगन से धर्मप्रचार में जुट गए। जब १९२९ में आपके गह नगर हैदराबाद में आर्य युवक समाज की स्थापना हुई तो आप भी इसके सदस्य बने। वाद–विवाद में आप पौराणिकों को उत्तर देने में आनन्द अनुभव करते थे।

१९३१ में मिर्जाइयों की अंजमन द्वारा जब हिन्दू देवी–देवताओं का गन्दा स्वरूप पेश किया जाने लगा तो तुलसी राम जी कुपित हो उठे। वह उन्हें उत्तर देने के लिए आगे आए। इसी सन्दर्भ में एक पुस्तक ''तारीखे इस्लाम'' का सिन्धी भाषा में अनुवाद प्रकाशित करवा दिया जबकि मूल उत्तर न बन पाने पर मिर्जाइयों ने मुसलमानों को नाथूराम के विरूद्ध उकसाना शुरू किया। घणा भरा वातावरण तैयार करने के बाद १९३३ में नाथूराम जी के विरूद्ध अभियोग चला दिया। कोर्ट में यह सिद्ध होने के बाद कि यह नाथूराम का लिखा न होकर केवल अनुवाद मात्र है तो भी उन्हें सैशन सुपुर्द कर दिया गया, जहां उन्हें डेढ़ वर्ष का कारावास तथा एक सहस्र रूपये का दण्ड सुनाया गया। इस अन्याय पूर्ण निणर्य से सिन्ध के प्रत्येक परिवार में शोक की लहर फैल गई। जबकि मिर्जाइयों में मूल ईसाई लेखक के विरूद्ध एक शब्द बोलने का भी साहस नहीं हुआ।

चीफ कोर्ट में इस अन्याय के विरूद्ध अपील की गई। २० दिसम्बर १९३४ को बैंच ने केस पर निर्णय देना था, हाल खचाखच भरा था। अकस्मात् न्यायालय में एक भयंकर चीत्कार सुनाई दी। अब्दुल क्यूम नामक एक मतान्ध पठान ने मौका पाकर नाथुराम जी के पेट में छूरा घोंप दिया। पं० लेखराम के समय के अनुरूप ही धर्मवीर नाथूराम की अन्तडियां बाहर निकल आईं। यहीं पर ही नाथूराम जी अमरत्व को प्राप्त हुए। हत्यारे को मौके पर ही पकड़ लिया गया। शहीद को अन्तिम विदा देने भारी भीड़ उमड़ आई। नगर भर में हड़ताल की गई। पूर्ण वैदिक रीति से संस्कार हुआ। इससे समाज में एक नया जोश पैदा हुआ। हत्यारे को फांसी हुई।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, राजस्थान द्वारा वेद प्रचार के अन्तर्गत

होलिकोत्सव एवं नवसस्येष्टि का आयोजन

आर्य प्रादेशिक उपसभा राजस्थान तथा आर्य समाज केसरगंज के संयुक्त तत्वावधान में चांद बावड़ी और दयानन्द मार्केट वालों के जन सहयोग से प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी आचार्य मोक्षराज के सान्निध्य में ऐतिहासिक चांदबाड़ी चौराहे पर पवित्र होलिकोत्सव एवं नवसस्येष्टि पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। समारोह का शुभारम्भ वहद् यज्ञ और ईश्वर भक्ति गीत से हुआ।

समारोह में उपस्थित जन–समूह को सम्बोधित करते हुए आचार्य मोक्षराज ने कहा कि वर्तमान में पर्वो का वैदिक स्वरूप निरन्तर विकत होता जा रहा है। पर्वो की मौलिकता का ह्रास शोचनीय विषय होता जा रहा है। प्राचीन काल में फसलों से प्राप्त नवान्न – गेहूं, चना, जौ आदि की आहुति यज्ञ में देकर ही उपभोग करने की श्रेष्ठ परम्परा थी, जिससे परिवर्तित एवं संक्रमित वातावरण आरोग्यप्रद निष्पन्न होता था।

अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में प्रो० जिज्ञासु ने कहा कि होली का पर्व उमंग–उत्साह का पर्व है। समाज के सब लोग ऊँच–नीच, अमीर–गरीब, छुआछूत की दुर्भावनाओं को त्याग कर गिले–शिकवों को दूर कर स्वच्छ-निर्मल हृदय से परस्पर गले मिलकर तथा काम, क्रोध–ईर्ष्या–द्वेष वैमनस्य आदि मानव दुर्बलताओं को अग्नि देव के समक्ष भस्मसात करके परस्पर सौहार्द के रंग में रंगीला बनकर सामाजिक वातावरण में प्रेम की गंगा बहा देनी चाहिए। – *आचार्य गोविन्द सिंह*

आर्य विद्या परिषद् हरयाणा के प्रस्तोता

महात्मा वेदपाल आर्य को वाहन भेंट

दिनांक १६ मार्च, २००८ को दोपहर बाद ३.०० बजे एक भव्य समारोह का आयोजन आर्यसमाज मॉडल टाउन करनाल में अभिनन्दन समारोह समिति करनाल द्वारा किया गया, जिसकी अध्यक्षता पूज्यपाद आचार्य बलदेव जी ने की। सम्मेलन में मुख्य अतिथि पूज्य आचार्य ज्ञानेश्वर सामाजिक सेवा, यज्ञादि के क्षेत्र में उनके सराहनीय योगदान का उल्लेख किया। पूज्य आचार्य बलदेव जी व पूज्य आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी ने वाहन की चाबी महात्मा जी को सौंपी।

अन्त में महात्मा वेदपाल जी ने सभी का धन्यवाद किया और विश्वास दिलाया कि वे सदा जी–जान से समाज

प्रवेश सूचना

आर्ष कन्या गुरूकुल दाधिया राजस्थान राज्य के अलवर जिले में राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या–८ पर साबी नदी के किनारे स्थित एक रमणीक संस्था हैं। यह गुरूकुल दिल्ली से लगभग १०० कि०मी० तथा जयपुर से १५० कि०मी० की दूरी पर स्थित है। यह गुरूकुल वर्तमान में कन्याओं की शिक्षा का सर्वोत्तम केन्द्र है। अतः समस्त पाठकों से निवेदन है कि गुरूकुल में अधिक से अधिक प्रवेश दिलाकर आर्ष सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार में योगदान दें।

गुरूकुल की विशेषताएं :-

१. कक्षा ६,७,८,६,११ व शास्त्री प्रथम वर्ष में प्रवेश प्रारम्भ ।
२. महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से मान्यता प्राप्त।
३. विस्तत भू–भाग एवं आधुनिक सुविधायुक्त विशाल भवन।
४. पौष्टिक भोजन। ५. कम्प्यूटर शिक्षा। ६. योग्य एवं अनुभवी आचार्यगण।
७. शान्त, सुरम्य व एकान्त वातावरण। ८. तरणताल। सम्पर्क करें :–

प्राचार्या प्रेमलता,
आर्ष कन्या गुरूकुल, दाधिया, जिला अलवर, राजस्थान-३०१४०१
मोबाइल नं०- ०६४१६७४७३०८, दूरभाष नं० ०१४६५-२७०५०३/२७०४३८

पुस्तक समीक्षा

कर्म एवं कर्मफल मीमांसा

लेखक : सतीश आर्य
मूल्य : १७५/- रुपये
प्राप्ति स्थान :

इस ग्रन्थ में निम्न विषयों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है :–

कर्मफल के मूलभूत सिद्धान्त, ईश्वरीय और मानवीय कर्मफल व्यवस्था, कर्मफल के रूप में मिलने वाले जाति, आयु और भोग का विस्तारपूर्वक वर्णन, कर्म मीमांसा, परमात्मा द्वारा जीवों के लिए प्रदत्त कर्म स्वतन्त्रता का निरुपण, वित्त का स्वरूप तथा वत्तियां, अविद्यादि

समस्त सम्मानीय पाठकों की सेवा में

वार्षिक एवं आजीवन शुल्क की दरों में वद्धि

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं०) के मुखपत्र साप्ताहिक आर्यसन्देश के समस्त पाठकों को सूचित किया जाता है कि बढ़ती महंगाई तथा बढ़ते डाक व्यय के कारण आर्यसन्देश के शुल्क की दरों में दिनांक २१ मार्च, २००८ होली से वद्धि की गई है।

अब साप्ताहिक आर्यसन्देश का वार्षिक शुल्क १५०/- तथा आजीवन शुल्क ७५०/- रुपये कर दिया गया है।

जी दर्शनाचार्य दर्शन योग महाविद्यालय आर्यवन रोजड़ (गुजरात), विशिष्ट अतिथि आचार्य श्री विजयपाल जी, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, श्री धर्मपाल जी, प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, वैदिक प्रवक्ता प्रो० ओमकुमार जी, आचार्य डॉ० देवव्रत जी गुरूकुल कुरूक्षेत्र ने सभा को सम्बोधित किया।

इस सभा का मुख्य विषय श्री महात्मा वेदपाल जी आर्य का अभिनन्दन करना था और उन्हें निजी रूप में वाहन भेंट करना था। महात्मा वेदपाल जी आर्य की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन, आर्यसमाज, वैदिक धर्म, सेवा में जुटे रहेंगे और वाहन का सदुपयोग वेदप्रचार, समाज–सेवा के कार्यों के लिए ही करेंगे। बाद में जलपान की सुन्दर व्यवस्था आर्य केन्द्रीय सभा करनाल द्वारा की गयी।

— प्रो० ओमकुमार आर्य, उपमंत्री

वैदिक यतिमंडल की विशेष बैठक

१२ अप्रैल, २००८

दोपहर २ से ५ बजे

स्थान :- दयानन्द मठ, दीनानगर, गुरदासपुर (पंजाब)

यतिमंडल के समस्त सदस्यों से निवेदन है कि अधिकाधिक संख्या में पधारकर बैठक को सफल बनाने में अपना सहयोग प्रदान करें

-: निवेदक :-

स्वामी दयानन्द सरस्वती

दूरभाष : 01875-220110, 09914122820

स्वामी सर्वानन्द जी का १०८ वाँ जन्मदिवस

वैशाखी मेला एवं पूज्य गुरूवर सन्त शिरोमणि स्वामी सर्वानन्द जी का १०५ वाँ जन्मदिवस ०१ अप्रैल से ११ अप्रैल,०८ जिला गुरुदासपुर में भिन्न–भिन्न गांवों में वेद प्रचार का आयोजन जिसमें विशेष रूप से नशा विरोधी एवं भ्रूण हत्या विरोधी सम्मेलन किये जाएंगे। १२ अप्रैल को दोपहर २ बजे से ५ बजे तक वैदिक यति मण्डल का विशेष अधिवेशन। १३ अप्रैल को प्रातः ८.०० बजे से १०.०० बजे तक गायत्री महायज्ञ की १०५ यजमानों द्वारा पूर्णाहुति। १० से ११ बजे तक महर्षि दयानन्द चित्रशाला का उद्घाटन प्रातः ११.०० बजे से दोपहर २.०० बजे तक तत्पश्चात् श्रद्धा सम्मेलन एवं उसके बाद ऋषि लंगर का आयोजन होगा।

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

— स्वामी सदानन्द सरस्वती
गुरदासपुर दयानन्द मठ दीनानगर

कोशों का स्वरूप, हिंसा, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि मनोविकारों का वर्णन तथा इनसे बचने के उपाय, मानवीय तथा ईश्वरीय कर्मफल व्यवस्था का वर्णन तथा अन्तर, अशुभ और मिश्रित कर्मों के लिए शास्त्रों में प्रतिपादित "प्रायश्चित" का विधान, नियतीवाद और नीतिवाद, वैराग्य, कर्म और कर्मफल सम्बन्धित विभिन्न शंकाओं का प्रश्नोत्तर द्वारा यथासम्भव समधान।

— सम्पादक

आर्यसमाज नरेला, दिल्ली- ४० का ७८वां वार्षिकोत्सव

५ अप्रैल से ६ अप्रैल, २००८

स्थान : आर्यसमाज नरेला का प्रांगण

रविवार दिनांक ६ अप्रैल, ०८

यज्ञ : प्रातः ८ से १० बजे

ओ३म् ध्वजारोहण : प्रातः १०.३० बजे

समाज सुधार सम्मेलन

समय :प्रातः ११ बजे से २ बजे तक

अध्यक्षता : आचार्य बलदेव जी

मुख्य अतिथि : श्री संदीप दीक्षित

इस अवसर पर आयोजित वैदिक सत्संग के सभी कार्यक्रमों में आप सपरिवार एवं इष्टमित्रों सहित पधारकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

— चौ० लायक राम, प्रधान
लाला हेमराज बंसल, मन्त्री

आशा है पाठक पूर्व की भांति सभा को अपना पूर्ण सहयोग बनाए रखेंगे। नए बनने वाले सदस्यों एवं आगामी शुल्क भेजने वाले समस्त सम्मानीय पाठकों से निवेदन है कि वे नई दरों के हिसाब से ही अपना शुल्क भेजें। सभा आपके सहयोग की पूर्ण अपेक्षा रखती है।

— सुशील महाजन "शील",
व्यवस्थापक

शोक समाचार

श्रीमती पद्मादेवी का निधन

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल एवं आर्यसमाज भोगल, नई दिल्ली के प्रधान डॉ० जे० पी० गुप्ता जी की सासूमां श्रीमती पद्मावती धर्मपत्नी श्री सुरेन्द्र प्रकाश का ८५ वर्ष की अवस्था में दिनांक २५ मार्च, ०८ को निधन हो गया। वे अपने पीछे तीन पुत्रों एवं दो पुत्रियों का भरा–पूरा परिवार छोड़ गई हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें।

- सम्पादक

आर्यसमाज मॉडल बस्ती शीदीपुरा,नई दिल्ली का

वार्षिकोत्सव

११, १२, १३ व १४ अप्रैल, ०८
सामवेद यज्ञ– प्रातः ७.३० से ८.४५बजे
ब्रह्मा – डॉ० सूर्यनारायण जी
सान्निध्य – पं० जय प्रकाश शास्त्री
भजन – महाशय उदयवीर (मथुरा)
प्रवचन – प्रातः ६.१५ से १० बजे
पूर्णाहुति - १४ अप्रैल प्रातः ८ बजे
मुख्य समारोह – ६.३० से १ बजे
प्रीतिभोज – १ बजे से
सभी आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधार कर धर्मलाभ उठावें।

– चूनीलाल विज (प्रधान)
अमरनाथ गोगिया (मंत्री)

यजुर्वेद पारायण यज्ञ

दिनांक १० से १३ अप्रैल, ०८

स्थान : महाजन निवास
सी–३/२३६, जनकपुरी, नई दिल्ली
यज्ञः प्रतिदिन प्रातः ७ से ६ बजे
ब्रह्मा : पं० प्रणवदेव शास्त्री
वेदपाठ : ब्रह्मचारी गुरुकुल गौतमनगर
प्रवचन : आचार्य चन्द्रशेखर
पूर्णाहुति : १३ अप्रैल, २००८
समय– प्रातः ६ से ११.३० बजे
ऋषि लंगर : दोपहर १ बजे
आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

– सोमदत्त महाजन

आर्यसमाज गोविन्दपुरी, नई दिल्ली-१६ के ३५वें वार्षिकोत्सव पर

ऋग्वेदीय यज्ञ

सोमवार ७ अप्रैल से १३ अप्रैल, ०८
यज्ञ : प्रातः ६.३० से ८ बजे तक
ब्रह्मा : डॉ० धर्मेन्द्र शास्त्री
भजन : श्री अशोक कुमार आचार्य
वेदकथा : रात्रि ७.४५ से ८.४५ बजे
यज्ञ पूर्णाहुति : १३ अप्रैल, ०८
यज्ञ : प्रातः ७.३० बजे से
ध्वजारोहण : श्री प्रेम नारायण वार्षणेय
समय : प्रातः ६.४५ बजे

समापन समारोह
अध्यक्षता : श्री पुरुषोत्तम लाल गुप्ता
प्रमुख वक्ता : सर्वश्री ब्र० राजसिंह आर्य, विनय आर्य, धर्मपाल आर्य, एस. पी. सिंह, आचार्य आशीष।
ऋषि लंगर : दोपहर १ बजे।
आप सब अधिकाधिक संख्या मे पधारकर धर्मलाभ प्राप्त करें एवं समारोह की शोभा बढ़ाएं।

– गंगाशरण शर्मा, प्रधान
सत्येन्द्र मिश्रा, मन्त्री

श्रीमद्दयानन्द आर्ष गुरुकुल एवं आदर्श गौशाला खेड़ाखुर्द, दिल्ली-८२ का

वार्षिकोत्सव समारोह

रविवार २० अप्रैल, २००८

गुरुकुल खेड़ाखुर्द का वार्षिकोत्सव

वेद प्रचार मंडल प. दिल्ली एवं आर्यसमाज कीर्ति नगर के तत्वावधान में

शिक्षा शिविर

"वेद का पढ़ना-पढ़ाना"
वेद प्रवेशार्थ संस्कत संभाषण शिविर
४ अप्रैल से १२ अप्रैल, ०८

स्थान : आर्यसमाज कीर्ति नगर,
नई दिल्ली–११००१५

समय : दोपहर ३ से सायं ५ बजे
सायं ७ से रात्रि ६ बजे
अध्यक्षता : डॉ० धर्मवीर जी
समापन : १३ अप्रैल, २००८
समयः सायं ६ से ८ बजे
सभी आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधार कर धर्मलाभ उठावें।

– ओमप्रकाश आर्य (प्रधान)
सतीश चड्ढा (मंत्री)

आर्यसमाज पंचदीप, सम्राट एन्कलेव पीतमपुरा, दिल्ली में आर्यसमाज स्थापना दिवस, रामनवमी एवं

पुस्तकालय भवन का उद्घाटन

रविवार ६ अप्रैल, ०८

आर्यसमाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-६० का

५६वां वार्षिकोत्सव एवं यजुर्वेदीय यज्ञ

६ अप्रैल, ०८ से १३ अप्रैल, २००८
यज्ञ– प्रातः ६.१५ से ८.००बजे
ब्रह्मा – डॉ० भारद्वाज पाण्डेय
भजन – श्री जगत वर्मा (पंजाब)
प्रवचन – आचार्य भद्रकाम वर्णी
भजन–प्रवचनः सायं ७.००–६.०० बजे
महिला सम्मेलन : १२ अप्रैल, ०८
समय : दोतपर १ से ५ बजे तक
पूर्णाहुति एवं समापन समारोह
रविवार १३ अप्रैल, २००८
यज्ञ पूर्णाहुति : प्रातः ७.३० से ६ बजे
सर्वश्री डॉ भारद्वाज पाण्डेय, गवेन्द्र शास्त्री, कैलाश शास्त्री, श्रीमती प्रभा शास्त्री।
भजन : श्री गुलाब सिंह राघव
आर्य महासम्मेलन : प्रातः १०.१५बजे
विषय : वैदिक शिक्षा प्रणाली से ही स्वस्थ समाज का निर्माण सम्भव
अध्यक्षता : डॉ० भारद्वाज पाण्डेय
मुख्य अतिथि : डॉ विजय कुमार मल्होत्रा
आप सब अधिकाधिक संख्या में इष्टमित्रों सहित पधारकर कार्यक्रम की सफलता मेंसहयोग देवें।

– अशोक सहगल, प्रधान
नरेन्द्र मोहन वलेचा, मन्त्री

आर्यसमाज नारायणा विहार, जी ब्लाक,नई दिल्ली का
३७वां वार्षिकोत्सव

१४ से २० अप्रैल, २००८

यज्ञ– प्रातः ६.३० से ८.००बजे
ब्रह्मा – आचार्य श्यामदेव शास्त्री
भजन – श्री जगत वर्मा (पंजाब)
प्रवचन – श्री राजू वैज्ञानिक
भजन–प्रवचनः सायं ७.३०–६.३० बजे

पूर्णाहुति एवं समापन

रविवार २० अप्रैल, २००८

समय : प्रातः १० बजे से १ बजे

बच्चों के कार्यक्रम, भजन, प्रवचन, अतिथि सत्कार एवं पुरस्कार वितरण। ऋषि लंगर – १.३० बजे

सभी आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधार कर धर्मलाभ उठावें।

– भूपेन्द्र सेतिया (प्रधान)
करण सिंह तंवर (मंत्री)

आवश्यकता है

आर्यसमाज बी० एन० पूर्वी शालीमार बाग, दिल्ली–५२ में योग्य विवाहित पुरोहित की आवश्यकता है, जो प्रभावी ढंग से संस्कार व प्रवचन आदि में कुशल हो। साथ ही सेवक की भी तुरन्त आश्यकता है। शीघ्र पत्र या फोन से सम्पर्क करें :–

देवराज कालरा, मन्त्री
फोन : २७४६६११४, २७४७४६१४

---

२० अप्रैल, २००८ को बड़े धूम–धाम से आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर २५ लोगों को शुद्ध करके वैदिक धर्म की दीक्षा दी जाएगी। गत अगस्त माह के श्रावणी पर्व के शुभ अवसर पर गुरुकुल ने २४ लोगों को शुद्ध करके वैदिक धर्म की दीक्षा दी थी।

सभी आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर दीक्षा लेने वाले बन्धुओं का उत्साह बढ़ाएं।

– आचार्य सुधांशु,

आर्यसमाज राजनगर-२, महरौली मार्ग, पालम कालोनी नई दिल्ली-४५ में
ऋषिबोधोत्सव सम्पन्न

दिनांक ५ एवं ६ मार्च, २००८ को आर्यसमाज राजनगर, पालम कालोनी में वर्षों बाद ऋषि बोधोत्सव मनाया गया, जिसमें आचार्य स्वामी ऋतस्पति जी परिव्राजक (होशंगाबाद) के ब्रह्मत्व में गायत्री महायज्ञ हुआ। आचार्य चन्द्रशेखर जी ने ऋषि के कार्यों को आगे बढ़ाने पर बल दिया।

इस अवसर पर क्षेत्रिय विधायक श्री धर्मदेव सोलंकी जी ने भवन निर्माण हेतु ११ हजार रुपये दान दिए तथा सभी को अधूरे निर्माण को पूरा करने में सहयोग की अपील की।

कार्यक्रम के अन्त में आर्यसमाज के प्रधान श्री प्रेमकान्त बत्रा जी ने सभी का स्वागतम एवं धन्यवाद किया।

– जीवनप्रकाश शास्त्री, मन्त्री

यज्ञ : प्रातः ७ से ६ बजे तक
ब्रह्मा : ब्र० राजसिंह आर्य
पुस्तकालय उद्घाटन : प्रातः ६ बजे
भजन : श्री यशपाल मित्तल एवं आशा गोयल
प्रवचनः ब्र० राजसिंह आर्य

आप सब अधिकाधिक संख्या मे पधारकर धर्मलाभ प्राप्त करें एवं समारोह की शोभा बढ़ाएं।

– आनन्द प्रकाश गुप्ता, प्रधान
मनोहरलाल गुप्ता, मन्त्री

स्वामी दयामुनि विद्यापीठ, गुरुकुल कलानौर, भिवानी रोड, कलानौर,रोहतक, दूरभाष : ०१२५८-२२३१००
-: प्रवेश सूचना :-
सत्र २००८-०६

भिवानी बोर्ड हरियाणा से सम्बद्ध कक्षा तीसरी से दसवीं तक शुद्ध वातावरण एवं संस्कारों से परिपूर्ण पूर्णतया आवासीय उत्तम शिक्षण संस्थान स्वामी दयामुनि विद्यापीठ, गुरुकुल कलानौर में १ अप्रैल से प्रवेश प्रारम्भ है। संध्या, हवन, आसन, प्राणायाम, योग एवं उत्तम संस्कारों द्वारा चरित्र निर्माण, कुश्ती, कबड्डी, बॉलीबाल, बैडमिंटन आदि खेलों का प्रशिक्षण। मासिक व्यय १०००/– रुपये। विशेष प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करने पर ही प्रवेश दिया जाएगा। प्रवेश के इच्छुक अभिभावक शीघ्र सम्पर्क करें।

– आचार्य

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्वावधान में
२७वें वनवासी वैचारिक क्रान्ति शिविर

१८ मई से १ जून, २००८

स्थान : आर्यसमाज मैन बाजार, रानी बाग, दिल्ली

उद्घाटन : १८ मई, रात्रि ८ बजे
यज्ञोपवीत संस्कार : २५ मई,
समय : प्रातः ८ बजे

समापन : १ जून, प्रातः ८ बजे

आप सब कार्यक्रमानुसार पधारकर शिविरार्थियों को अपना आशीर्वाद प्रदान करें।

– वेदव्रत मेहता, प्रधान
प्रेमलता शास्त्री, महामन्त्री

आर्यसमाज मोती बाग, नई दिल्ली- २१ का
स्वर्ण जयन्ती वार्षिकोत्सव

४ एवं ५ अप्रैल, २००८

भजन एवं प्रवचन : महाशय वेगराज जी सायं ७ से ६ बजे

समापन समारोह : ६ अप्रैल, २००८

यज्ञ : प्रातः ८.३० से ६.३० बजे
ब्रह्मा : पं० दयानन्द शास्त्री
भजन : महाशय वेगराज जी
प्रीतिभोज : दोपहर १२.१५ बजे

आप सब अधिकाधिक संख्या मे पधारकर धर्मलाभ प्राप्त करें एवं समारोह की शोभा बढ़ाएं।

– ओमवीर सिंह, मन्त्री

साप्तहिक आर्य सन्देश

31 मार्च, 2008 से 6 अप्रैल, 2008

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि. नं० डी.एल. (एन.डी.) - ११/६०७१/२००६-२००८
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक ३/४–०४–२००८
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३६/२००६-०८
आर. एन. नं. ३२३८७/७७

महर्षि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के प्रणयन के 125वें वर्ष पर

आर्यसन्देश का विशेषांक

समस्त दानी महानुभावों, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं तथा व्यापारिक संस्थानों एवं अन्य सामाजिक तथा राष्ट्रवादी संगठनों से निवेदन है कि वे इस संग्रहणीय विशेषांक के लिए अपना विज्ञापन अथवा सहयोग राशि प्रदान करने की कृपा करें। विशेषांक का आकार एवं विज्ञापन दरें इस प्रकार हैं:-

विशेषांक का आकार	:	11 इंच X 8.5 इंच
पूरा पृष्ठ	:	4000/- रुपये
आधा पृष्ठ	:	2500/- रुपये
चौथाई पृष्ठ	:	1500/- रुपये

विज्ञापन शुल्क चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से "आर्यसन्देश" के नाम से सभा कार्यालय-15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर 30 अप्रैल, 08 तक भेजें।

-: निवेदक :-

ब्र0 राजसिंह आर्य — प्रधान सम्पादक — 9350077858

विनय आर्य — सम्पादक — 9350204466

सुशील महाजन 'शील' — व्यवस्थापक — 9312667702

वेदव्रत आर्य (सहयोगी) राजेन्द्र दुर्गा (सहयोगी) 9818087360

"वैदिक प्रकाशन" की प्रस्तुति

आर्यजनता की भारी मांग पर पुनः निर्मित

ओ३म् स्टिकर

केवल मात्र 150/- सैंकड़ा

विक्रेताओं के लिए विशेष छूट

आज ही सभा कार्यालय को अपने आर्डर भेजें। डाक-व्यय अलग से देय होगा। सम्पर्क करें - २३३६०१५०, २३३६५६५६

Email : aryasabha@yahoo.com

अमृत वचन

दूसरों की भलाई करने से 'पुण्य' अर्थात् सुख-शान्ति की प्राप्ति होती है और दूसरों को कष्ट पहुंचाने से 'पाप' अर्थात् दुःख और क्लेश प्राप्त होते हैं। यदि सुख चाहते हैं तो पुण्य अर्जित करें और यदि दुःख चाहते हैं तो पाप कमाएं। मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है ही।

- महर्षि वेदव्यास

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य (चार भागों में)
सम्पूर्ण वेद-भाष्य का मूल्य 1800/- रुपये
प्राप्त करें मात्र 1500/- में

डाक-व्यय पृथक् से देय होगा।

प्राप्ति-स्थान : - वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001; दूरभाष : 011-23360150, 23343737

आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह-2008
सुन्दर कवरेज

प्रज्ञाचक्षु श्री सुचित नारंग के शास्त्रीय संगीत
बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रमों की एकीकृत वीसीडी
तथा
सुप्रसिद्ध प्रचारक वीसीडी "सत्य की राह"

दोनों सीडी मात्र 50/- रुपये में

स्वयं देखें, औरों को दिखाएं। बच्चों को भेंट एवं पुरस्कार रूप में दें

नोट : डाक द्वारा मंगाने पर डाक-व्यय पथक् से देय होगा।
प्राप्ति स्थान :- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१
टैलीफैक्स : ०११-२३३६०१५० ईमेल : aryasabha@yahoo.com

।। ओ३म् ।।
वैदिक प्रकाशन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
☎ : 23360150, 23343737; टैलिफैक्स : 23365959

उपलब्ध साहित्य/ प्रचार सामग्री

क्र.	पुस्तक का नाम	लेखक/सम्पादक	मूल्य (रु. में)
1	दयानन्द लघु ग्रन्थ संग्रह	स्वामी जगदीश्वरानन्द	25-
2	दैनिक सत्संग गुटका	स्वामी जगदीश्वरानन्द	400/-सैंकड़ा
3	ट्रैक्ट : आर्योद्देश्यरत्नमाला	डॉ० रघुवीर वेदालंकार	250/-सैंकड़ा
4	ट्रैक्ट : वेद ईश्वरीय ज्ञान	डॉ० कृष्णवल्लभ पालीवाल	250/-सैंकड़ा
5	ट्रैक्ट : मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम	डॉ० महेश विद्यालंकार	350/-सैंकड़ा
6	ट्रैक्ट : महर्षि दयानन्द की विशेषताएं	डॉ० महेश विद्यालंकार	250/-सैंकड़ा
7	नैतिक शिक्षा की पुस्तकें (कक्षा 1-4)	श्री सुरेन्द्र रैली	प्रति कक्षा 15/-
8	नैतिक शिक्षा की पुस्तकें (कक्षा 5-8)	श्री सुरेन्द्र रैली	प्रति कक्षा 20/-
9	नैतिक शिक्षा की पुस्तकें (कक्षा 9-12)	श्री सुरेन्द्र रैली	प्रति कक्षा 25/-
10	सीडी : महामृत्युंजय मन्त्र, गायत्री मन्त्र, ऋषि गाथा, वैदिक संध्या-यज्ञ		प्रत्येक 40/-
11	वीसीडी : वैदिक संध्या-यज्ञ, ऋषि गाथा		प्रत्येक 50/-
12	कैसेटें - भजन, यज्ञ, ऋषि गाथा आदि		प्रत्येक 25/-
13	ओ३म् ध्वज (छोटे)		10/-
14	ओ३म् ध्वज (बड़े)		20/-
15	वीसीडी : अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-06 (दो सीडी)		100/-
16	**वीसीडी : सत्य की राह**		**50/-**
17	**वैदिक ओ३म् स्टीकर**		**150/- सैंकड़ा**

वैदिक प्रकाशन से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की जानकारी अथवा आर्डर देने के लिए उपरोक्त पते अथवा E-mail : aryasabha@yahoo.com पर सम्पर्क करें। साहित्य/प्रचार सामग्री डाक द्वारा मंगाने पर डाकव्यय पथक् से देय होगा।

— **महामन्त्री**

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली– २ से छपवाकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५–हनुमान रोड नई दिल्ली-१; दूरभाष : २३३६०१५०; फैक्स २३३६५९५९; E-mail : aryasabha@yahoo.com** से प्रकाशित किया।

सम्पादक : **ब्र० राजसिंह आर्य** सह सम्पादक : **विनय आर्य** व्यवस्थापक : **सुशील महाजन** सह व्यवस्थापक : **डॉ० ओमप्रकाश भटनागर**